1

Q:- "भारवेरर्थ गौरवम्" इस उक्ति की समीक्षा करें।

Ans:- संस्कृत साहित्य में अलंकृत शैली के प्रवर्तक होने के कारण भारवि को कलापक्ष का कवि कहा जाता है। कलापक्ष में भी उनका ध्यान अन्य दिशा में न जाकर विशेष रूप से अर्थगौरव पर भी रहा है। यही कारण है कि जिस प्रकार कालिदास के संबंध में 'उपमा कालिदासस्य' तथा नैषध के संबंध में 'नैषधं पदलालित्यम्' एवम् माघ के विषय में 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' इत्यादि लोकोक्तियाँ विद्वद्मंडली में प्रचलित हो गई हैं, उसी प्रकार भारवि के संबंध में 'भारवेरर्थगौरवम्' इस लोकोक्ति ने अत्यन्त ख्याति प्राप्त कर ली है। अल्प शब्दों में विपुल अर्थ का सन्निवेश कर देना ही अर्थ गौरव की सच्ची पहिचान है। महाकवि भारवि ने लम्बे से लम्बे तथा गंभीर से गंभीर अर्थ को कम से कम शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त कर अपनी बेजोड़ काव्यकुशलता का परिचय दिया है। यद्यपि मल्लिनाथ ने इनके काव्य में क्लिष्टता का आरोप किया है (नारिकेल-फल सम्मितं वचो भारवेः), तथा कुछ अन्य आलोचकों ने तो किरात के प्रथम तीन सर्गों को विशेष कठिन होने के कारण 'पाषाणत्रय' की संज्ञा तक दे दी है, तथापि भारवि की कविता में एक विचित्र चमत्कार का दर्शन होता है। इनकी अर्थगरिमा पाठकों के हृदय को हठात् अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं रहती। इन्हीं बातों को लेकर एक विज्ञ आलोचक ने ठीक ही कहा है : प्रदेशवृत्त्यापि-महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना। सा भारवेः सत्पथदीपिकेव रम्या: कृतिः कैरिव नोपजीव्या॥

भारवि का ध्यान अर्थगौरव पर विशेष रूप से रहता है। इस बात का स्पष्ट संकेत

युधिष्ठिर के द्वारा भीम के भाषण की जो प्रशंसा कराई गई है, उससे भी प्राप्त होता है:—

'स्फुरत्ता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्॥'

अर्थात् पदों के प्रयोग में अस्फुरत्ता नहीं है। अर्थगौरव के ऊपर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। शब्दार्थ अलग-अलग, स्पष्टतः प्रतीत होते हैं फिर भी उनके पारस्परिक संबंध कहीं टूटने नहीं पाये हैं।

आलोचकों ने उपर्युक्त श्लोक को भारवि की कविता के यथार्थ निदर्शन के रूप में स्वीकार किया है। वस्तुतः उनके कलासंबंधी सिद्धांत का परिचायक यही श्लोक है। इस उक्ति द्वारा मल्लिनाथ ने भी उनके अर्थगौरव का समर्थन किया है। निस्सन्देह भारवि ने अपने भावों की गरिमा से, अर्थगौरव से भरी हुई कविता से न जाने कितने व्यक्तियों का जीवन-दर्शन किया है, मार्ग प्रशस्त किया है।

अब हम उदाहरण द्वारा उनके अर्थगौरव पर विचार करेंगे, वैसे तो उनका सम्पूर्ण काव्य ही अर्थगौरव का अनुपम उदाहरण है फिर भी उनके व्यक्तित्व का सच्चा प्रदर्शन उनकी एकमात्र कृति "किरातार्जुनीयम्" के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग के उस स्थल पर हुआ है जहाँ द्रौपदी, भीम तथा युधिष्ठिर का राजनीतिक वाद-विवाद है। कारण यह है कि इन तीनों की उक्तियों में अर्थ की गरिमा पूर्णतः परिलक्षित होती है। भारतवर्ष की प्राचीन स्त्रियों का कितना गंभीर विचार था, राजनीति विषयक ज्ञान में उनकी कितनी गंभीरता थी ये सारी बातें द्रौपदी की उक्ति से स्पष्ट हो जाती हैं। युधिष्ठिर को उद्‌बोधित करती हुई द्रौपदी कहती है:—

'व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥

अर्थात जो व्यक्ति कपटी व्यक्तियों के साथ कपटी नहीं बनते, वे मूर्ख दूसरों के द्वारा पराजित कर दिए जाते हैं। जिस प्रकार नंगे शरीरवाले सिपाही के शरीर में तीक्ष्ण बाण घुसकर उसे मार डालते हैं, उसी प्रकार कपटी भी सरल लोगों के घर में प्रवेश कर उनका विनाश कर डालते हैं। 'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।'

अर्थगौरव का एक दूसरा उदाहरण देखें:-

'विहाय शान्तिं नृप धाम तत्पुनः प्रसीद सन्धेहि-
- वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं-
- मुनयो न भूभृतः॥

अर्थात हे राजन! अब तो आप कृपा करें और इस वैराग्य को छोड़कर शत्रुओं का वध करने के लिए अपने-प्रथम तेज को पुनः धारण करें। इस निष्काम-भावना से मुनिलोग ही अपने शत्रुओं को पराजित करके ब्रह्मप्राप्ति रूपी सिद्धि को प्राप्त करते हैं, न कि राजालोग इस भावना से शत्रुओं को पराजित कर राज्यलक्ष्मी प्राप्त कर सकते हैं।

द्रौपदी की इन उक्तियों में क्या ही अर्थगौरव भरा हुआ है, थोड़े से शब्दों में राजनीति-विषयक ज्ञान की कितनी गंभीरता इन उक्तियों से प्रकट होती है। द्रौपदी की ऐसी ही उक्तियों को लेकर आगे चलकर द्वितीय सर्ग में भीम ने कहा है:-

'परिणामसुखे गरीयसि व्यथकेऽस्मिन् वचसि क्षतौजसाम्।
अतिवीर्यवतीव भेषजे बहुरल्पीयसि दृश्यते गुणः॥'

अर्थात जिस प्रकार उत्तम रासायनरूप औषधि की अल्पमात्रा भी बहुत गुणों से युक्त होती है, उसी प्रकार द्रौपदी की वाणी भी कम शब्दों में अधिक भाव भरनेवाली है।

इस प्रकार की उक्ति – 'स्वल्पाञ्च मात्रा बहुलोगुणाश्च' का सुन्दर उदाहरण है, जो अर्थगौरव की खास पहिचान है। यद्यपि इस तरह का राजनीतिक वाद-विवाद माघ के द्वितीय सर्ग में भी है, फिर भी भारवि के राजनीतिक वादविवाद की अपनी निजी विशेषता है।

ऐसी ही बातों को लक्ष्यकर देवर्षि सनाढ्य सद्श विज्ञ आलोचक ने कहा है – "काव्य रसिकों के लिए किरातार्जुनीयम् में जहाँ एक ओर तन्मय एवं सम्मोहित कर देनेवाली कमनीय उद्भावनाएँ विद्यमान हैं, वहाँ दूसरी ओर विद्वज्जनों के लिए 'गागर में सागर' की भाँति अगाध ज्ञान की बातें भी समाविष्ट हैं।"

वस्तुतः भारवि ने अपने व्यवहारिक एवं शास्त्रीय अनुभव के द्वारा न जाने कितने नैतिक सिद्धांतों की स्थापना की है। उनके भाव एवं अर्थगौरव भरे भाव लोकोक्ति एवम् मुहावरों का कार्य करते हैं। देखिए इन सम्बन्ध में कुछ उदाहरणों को। "हितं मनोहारिच दुर्लभं वचः।" 'सुदुर्लभाः सर्वमनोरमागिरः।' 'न वंचनीया प्रभवोऽनुजीविभिः।' 'वसन्ति हि प्रेम्णि गुणाः न वस्तुनि।' 'सतां हि वाणी गुणमेव भाषते।'

उपर्युक्त उदाहरणयुक्त विवरणों से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि भारवि के काव्य के विषय में यह कथन अक्षरशः सत्य है कि 'भारवेरर्थगौरवम्'। भारवि की सारगर्भित उक्तियों में मानव जीवन के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए ज्ञान का अपार सागर भरा हुआ है।

The END

T-2
Kiran